अध्याय 21

भोजपुरी के मुहावरा

'मुहावरा' अरबी भाषा के शब्द ह जवना के अर्थ होला- बातचीत कइल भा उत्तर दीहल। संस्कृत वाङ्मय में 'मुहावरा' के समानार्थक कवनो शब्द नइखे। कुछ लोग एकरा खातिर 'प्रयुक्तता', 'वाग्रीति', 'वाग्धारा' भा 'भाषा-सम्प्रदाय' के प्रयोग करेला। वी०एस० आप्टे अपना 'इंगलिश-संस्कृत कोश' में मुहावरा के पर्यायवाची शब्दन में 'वाक्पद्धति', 'वाकरीति', 'वाक्-व्यवहार' आ 'विशिष्ट स्वरूप' लिखले बाड़न। पराड़कर जी 'वाक् सम्प्रदाय' के एकर पर्यायवाची मनले बाड़न। काका साहेब कालेलकर 'वाक्-प्रचार' के मुहावरा खातिर 'रूढ़ि' शब्द के सुझाव दीहले बाड़न। युनानी भाषा में 'मुहावरा' के 'ईडियोमा', फ्रेंच में 'इडियाटिस्मी' आ अंग्रेजी में 'इडियम' कहल जाला। 'भोजपुरी मुहावरा संग्रह' के भूमिका में हवलदार त्रिपाठी 'सहृदय' के कथन बा कि "मोहाबरा (मुहावरा) में तीन गो शब्द बा- (मुँह+आव+रह) 'मुँह' के अर्थ 'मुख', 'आव' के अर्थ 'चमक' आ 'रह' के अर्थ 'रास्ता'। आने मुँह से निकलल चमकदार शब्द के 'मुहावरा' कहल जाला।" सहृदयके अनुसार 'मुहावरा' शब्द खातिर 'सिद्ध प्रयोग', 'परम्परा प्राप्त प्रयोग', 'साधु प्रयोग', 'वृद्धवाक् व्यवहार' आ 'व्यवहार सिद्ध प्रयोगे सटीक शब्द होलन स।

विद्वान लोग 'मुहावरा' के अपना-अपना ढंग से परिभाषित कहले स। हरिवंश राय शर्मा अपना 'मुहावरा कोश' के 'आमुख' में लिखले बाड़न कि मोट तौर पर हम कह सकिले कि जवना सुगठित शब्द समूह से लक्षणाजन्य कभी-कभी व्यंजनाजन्य कुछ विशिष्ट अर्थ निकलेला ओकरा के 'मुहावरा' कहल जाला। कभी-कभी ई व्यंग्यात्मक होलें।

मुहावरा के महत्व

मुहावरा के प्रयोग से भाषा चुस्त, सुदृढ़, गतिशील, रूचिकर, धारदार आ असरदार बन जाले। प्राय: मुहावरन में लक्षणा आ व्यंजना के प्रयोग निहित होला जवना चलते ओकरा प्रयोग से भाषा में प्रभावोत्पादकता आ चित्रमयता आ जाले, जइसे दाँत तले अंगुरी दबावल, रंगल सियार भइल, अपना गोड़ पर अपने कुल्हाड़ी मारल आदि। मुहावरन में कई प्रकार के अलंकार पावल जाला जवना चलते मुहावरन के प्रयोग से भाषा के सौंन्दर्य बढ़ जाला। भाषा में माधुर्य अउर ओज आ जाला। मुहावरन के सहायता से लेखक के 'गागर में सागर' भरे में सहायता मिलेला।

भोजपुरी के कुछ प्रमुख मुहावरा

1. **आग उगिलल**- कठोर बात बोलल
2. **अंगुरी पकड़ के पहुँचा पकड़ल**- थोड़ा आश्रय देला पर अधिकार जतावल
3. **अंगूठा देखावल**- धोखा दिहल, चिढ़ावल

4. **अंचरा पसारल**- दया के भीख **माँगल**
5. **अंट-शंट बकल**- ऊटपटांग बोलल
6. **आन्हर हाथ बटेर लागल**- संजोग से **अयोग्य के सफलता** मिलल।
7. **अकिल के पैदल**- मूर्ख
8. **अकिल ठिकाने लागल**- होश गुम भइल, गलती समझ में आइल।
9. **आपन माथ ओखरी में दिहल**- जानबूझ के खतरा मोलल
10. **अपना गोर पर खड़ा भइल**- स्वावलम्बी भइल
11. **आपना गोड़ पर कुल्हाड़ी मारल**- आपन हानि अपने कइल
12. **आँख के पानी गिरल/मरल**- बेलज्ज भइल
13. **आँख में गड़ल**- खटकल
14. **आँख चरबिआइल**- घमंडी बनल
15. **आँख लागल**- निन्द आइल
16. **आग में घीव डालल**- क्रोध भड़कावल
17. **आटा-दाल के भाव बुझाइल**- परिस्थिति के प्रतिकूलता के भान भइल
18. **इज्जत लिहल**- सम्मान नष्ट कइल
19. **उड़न-छू भइल**- गायब भइल।
20. **उधेड़बुन में पड़ल**- चिन्तित भइल
21. **उल्टा साँस चलल**- मरे का नियरा पहुँचल

22. **ऊसर में बीआ बोअल-** बेकार के काम कइल
23. **कटल-कटल दिखल-** अलग-थलग रहल
24. **कईची जइसन जबान चलल-** अमर्यादित बात बोलल
25. **करम फूटल-** अभागा, भाग्य बिगड़ल
26. **करेज छेदल-** मर्मस्पर्शी बात बोलल
27. **कसाई के खूँटा में बन्हाइल-** निर्दयी आदमी के हाथे दिहल
28. **कागज करिया कइल-** व्यर्थ में कुछ लिखल
29. **कान कइल-** ध्यान दिहल
30. **कान खड़ा भइल-** चौकन्ना भइल
31. **कान में तेल डाल के सुतल-** सुन के अनसुना कइल/लापरवाह भइल

बोध प्रश्न

1. **मुहावरा के परिभाषा दीं।**
2. **मुहावरा प्रयोग के महत्व बताईं।**
3. **नीचे लिखल मुहावरा के वाक्य प्रयोग द्वारा अर्थ बताईं-**

   गुड़ गोबर कइल, लाल-पियर भइल, अगिआइल, तरवा के लहर कपारे चढ़ल, बकबास कइल।

4. **भोजपुरी के अपठित दस मुहावरन के लिख के ओकर अर्थ बताईं।**

भोजपुरी कहाउत आ लोकोक्ति

कहाउत चाहे लोकोक्ति अनुभवसिद्ध ज्ञान के भंडार ह। कहाउत के भोजपुरी में 'कहावत' भी कहल जाला। जवना के सम्बन्ध लोक प्रसिद्ध कवनो लोककथा से होला। भोजपुरी के प्राय: हर कहाउत चाहे लोकोक्ति पद्यमय पावल जाला जवन एक चरन चाहे दू चरन आ कबो-कबो दू चरन से ज्यादे के भी होला, जइसे-**'सात भईस के सात चभक्का, सोरह सेर घीव खाँउव रे, कहाँ गइले तोर बाघ मामा, एक टक्कर लड़ जाऊँ रे। अतिसय लोभ बकुलवे किन्हा, छन में प्रान कोंकड़वे लिन्हा'। 'अघाइल बकुला के पोठिया तीत, 'अकिल के पटपट ग्यान कहाँ पाइला, एही अकिल से रउआ कछुआ के खाईला' वगैरह।**

ई सभ भोजपुरी के कहाउत आ लोकोक्ति ह, जवना में कवनो ना कवनो कथा छिपल बा। जइसे 'अकिल के पटपट गेयान कहाँ पाईला, एही अकिल से रउआ कछुआ के खाईला', एकरा में एगो कछुआ के कथा बा। 'एक बेर एगो सियार कछुआ के खाये खातिर पकड़लस। कछुआ चट से आपन मुँड़ी अपना देही के खोल में ढुका लिहलस। सियार जब कछुआ के खाये लागल त ओकरा दाँत से कछुआ के उपरवारी हड्डीदार परत कटइबे ना करे तब सोचलस कि कछुआ सूख के चीमर हो गइल बा, एकरा के पानी में भिंजा के मोलायम बना लिहब तब खाइल जाई। उ कछुआ के ले जाके पोखरा के पानी में किनारहीं ध दिहलस, धरते कछुआ पानी में सरक

गइल आ पानी में जाके ऊ सियार के मूर्खता पर इहे कहावत कहलस। ई कहाउत कवनो मूर्ख व्यक्ति का मूर्खता पर कहल जाला। अइसही हरेक कहाउत के जड़ कवनो ना कवनो लोककथा से जुड़ल होला।

भोजपुरी के कुछ प्रमुख कहाउत आ लोकोक्ति

1. **आन्हर गोरइया, भरसाई में खोंता**- मूर्ख आदमी आपन नाश अपने करेला।
2. **गाय मार के जूता दान**- भारी अपराध कर के मामूली प्रायश्चित कइल।
3. **चलनी दूसे सूप के जेकरा सहस्सर छेद**- खुद गलती करे वाला जब दोसरा में गलती बतावेला तब ओकरा पर दोसरा के व्यंग्य।
4. **अन्हरन में काना राजा**- मूर्खन का बीच कम अकिल वाला के प्रधानता।
5. **अधजल गगरी छलकत जाय**- कम जानकार के अधिक बोलल।
6. **आपन हाथ जगरनाथ**- अपने आप पर भरोसा कहल।
7. **आम के आम, गुठली के दाम**- दुगुना फायदा उठावल।
8. **आगे नाथ ना पाछे पागहा**- जिम्मेवारहीन आदमी।

9. **एक पंथ, दू काज**- एके साथ दूगो काम के भइल।

10. **करिया अक्षर भईंस बराबर**- निपढ़-गँवार।

11. **गुरू गुड़ चेला चीनी**- गुरू के आगे चेला के बढ़ल।

12. **घर के भेदिया लंका दाहे**- आपसी फूट से हानि।

13. **देशी मुर्गी बिलायती बोल**- दोसरा के नकल में आपन असलियत भुलाइल।

14. **नौ के लकड़ी नब्बे खरच**- लाभ कम आ खर्च अधिक।

15. **सात चूहा खाके बिलाई भइली भगतिन**- पापी द्वारा पुण्यात्मा बने के ढोंग।

बोध प्रश्न

1. लोकोक्ति चाहे कहाउत के परिभाषा बताईं।

2. नीचे लिखल पाँच कहाउत के अर्थ बताईं-

माटी के चंदन घसे रघुनंदन, जहाँ गाछ ना बिरीछ उहाँ लेंड़ पुरधान, हाथी के दाँत भीतर न जात, आरसी ना फारसी मियाँ जी बनारसी, करनी ना धरनी धिया ओठ बिदरनी।

3. अपना गाँव के पुरनिया लोग से सुन के पच्चास गो कहाउतन के लिखीं आ ओकर अर्थ बताईं।